

रविवार 11 अगस्त, 2024

विषय — आत्मा

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 139: 7, 8

"मैं तेरे आत्मा से भाग कर किधर जाऊं? वा तेरे साम्हने से किधर भागूं? यदि मैं आकाश पर चढ़ूं, तो तू वहां है! यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक में बिछाऊं तो वहां भी तू है!"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 139: 1, 2, 13, 14, 23, 24

- ¹ हेयहोवा, तू ने मुझे जांच कर जान लिया है॥
- ² तू मेरा उठना बैठना जानता है; और मेरे विचारों को दूर ही से समझ लेता है।
- ¹³ मेरे मन का स्वामी तो तू है; तू ने मुझे माता के गर्भ में रचा।
- ¹⁴ मैं तेरा धन्यवाद करूंगा, इसलिये कि मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया हूं। तेरे काम तो आश्चर्य के हैं, और मैं इसे भली भांति जानता हूं।
- ²³ हे ईश्वर, मुझे जांच कर जान ले! मुझे परख कर मेरी चिन्ताओं को जान ले!
- ²⁴ और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर!

पाठ उपदेश

बाइबल

1. अय्यूब 33: 4

- ⁴ मुझे ईश्वर की आत्मा ने बनाया है, और सर्वशक्तिमान की सांस से मुझे जीवन मिलता है।

2. भजन संहिता 27: 1, 4-6

- ¹ यहोवा परमेश्वर मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है; मैं किस से डरूं? यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है, मैं किस का भय खाऊं?
- ⁴ एक वर मैं ने यहोवा से मांगा है, उसी के यत्न में लगा रहूंगा; कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊं, जिस से यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूं, और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूं॥

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 5 क्योंकि वह तो मुझे विपत्ति के दिन में अपने मण्डप में छिपा रखेगा; अपने तम्बू के गुप्त स्थान में वह मुझे छिपा लेगा, और चट्टान पर चढ़ाएगा।
- 6 अब मेरा सिर मेरे चारों ओर के शत्रुओं से ऊंचा होगा; और मैं यहोवा के तम्बू में जयजयकार के साथ बलिदान चढ़ाऊंगा; और उसका भजन गाऊंगा॥

3. यशायाह 33: 20

- 20 हमारे पर्व के नगर सिय्योन पर दृष्टि कर! तू अपनी आंखों से यरूशेलम को देखेगा, वह विश्राम का स्थान, और ऐसा तम्बू है जो कभी गिराया नहीं जाएगा, जिसका कोई खूंटा कभी उखाड़ा न जाएगा, और न कोई रस्सी कभी टूटेगी।

4. लूका 4: 14 (से आत्मा)

- 14 फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा...।

5. लूका 8: 1 (से), 22 (से 1st.), 26-39

- 1 इस के बाद वह नगर नगर और गांव गांव प्रचार करता हुआ, और परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाता हुआ, फिरने लगा।
- 22 फिर एक दिन वह और उसके चेले नाव पर चढ़े, और उस ने उन से कहा; कि आओ, झील के पार चलें: सो उन्होंने नाव खोल दी।
- 26 फिर वे गिरासेनियों के देश में पहुंचे, जो उस पार गलील के साम्हने है।
- 27 जब वह किनारे पर उतरा, तो उस नगर का एक मनुष्य उसे मिला, जिस में दुष्टात्माएं थीं और बहुत दिनों से न कपड़े पहिनता था और न घर में रहता था वरन कब्रों में रहा करता था।
- 28 वह यीशु को देखकर चिल्लाया, और उसके साम्हने गिरकर ऊंचे शब्द से कहा; हे परम प्रधान परमेश्वर के पुत्र यीशु, मुझे तुझ से क्या काम! मैं तेरी बिनती करता हूं, मुझे पीड़ा न दे!
- 29 कि वह उस अशुद्ध आत्मा को उस मनुष्य में से निकलने की आज्ञा दे रहा था, इसलिये कि वह उस पर बार बार प्रबल होती थी; और यद्यपि लोग उसे सांकलों और बेडियों से बांधते थे, तौभी वह बन्धनों को तोड़ डालता था, और दुष्टात्मा उसे जंगल में भगाये फिरती थी।
- 30 यीशु ने उस से पूछा; तेरा क्या नाम है? उसने कहा, सेना; क्योंकि बहुत दुष्टात्माएं उसमें पैठ गई थीं।
- 31 और उन्होंने उस से बिनती की, कि हमें अथाह गड़हे में जाने की आज्ञा न दे।
- 32 वहां पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था, सो उन्होंने उस से बिनती की, कि हमें उन में पैठने दे, सो उस ने उन्हें जाने दिया।

- 33 तब दुष्टात्माएं उस मनुष्य से निकल कर सूअरों में गईं और वह झुण्ड कड़ाड़े पर से झपटकर झील में जा गिरा और डूब मरा।
- 34 चरवाहे यह जो हुआ था देखकर भागे, और नगर में, और गांवों में जाकर उसका समाचार कहा।
- 35 और लोग यह जो हुआ था उसके देखने को निकले, और यीशु के पास आकर जिस मनुष्य से दुष्टात्माएं निकली थीं, उसे यीशु के पांवों के पास कपड़े पहिने और सचेत बैठे हुए पाकर डर गए।
- 36 और देखने वालों ने उन को बताया, कि वह दुष्टात्मा का सताया हुआ मनुष्य किस प्रकार अच्छा हुआ।
- 37 तब गिरासेनियों के आस पास के सब लोगों ने यीशु से बिनती की, कि हमारे यहां से चला जा; क्योंकि उन पर बड़ा भय छा गया था: सो वह नाव पर चढ़कर लौट गया।
- 38 जिस मनुष्य से दुष्टात्माएं निकली थीं वह उस से बिनती करने लगा, कि मुझे अपने साथ रहने दे, परन्तु यीशु ने उसे विदा करके कहा।
- 39 अपने घर को लौट जा और लोगों से कह दे, कि परमेश्वर ने तेरे लिये कैसे बड़े काम किए हैं: वह जाकर सारे नगर में प्रचार करने लगा, कि यीशु ने मेरे लिये कैसे बड़े काम किए॥

6. रोमियो 12: 2

- 2 और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो॥

7. 2 तीमुथियुस 1: 7

- 7 क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ, और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है।

8. प्रेरितों के काम 17: 22 (से 2nd), 24-28

- 22 तब पौलुस ने अरियुपगुस के बीच में खड़ा होकर कहा; हे अथेने के लोगों मैं देखता हूं, कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े मानने वाले हो।
- 24 जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उस की सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता।
- 25 न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह तो आप ही सब को जीवन और स्वास और सब कुछ देता है।
- 26 उस ने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं; और उन के ठहराए हुए समय, और निवास के सिवानों को इसलिये बान्धा है।
- 27 कि वे परमेश्वर को ढूंढ़ें, कदाचित उसे टटोल कर पा जाएं तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं!

- 28 क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं; जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, कि हम तो उसी के वंश भी हैं।

9. रोमियो 8: 2, 6, 8, 9 (सं 1st.), 14

- 2 क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।
6 शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।
8 और जो शारीरिक दशा में है, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।
9 परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।
14 इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 468: 8-15

सवाल/ — होने का वैज्ञानिक कथन क्या है?

उत्तर/ — पदार्थ में कोई जीवन, सत्य, बुद्धिमत्ता नहीं है, न ही पदार्थ। सब अनंत मन और उसकी अनंत अभिव्यक्ति है, भगवान के लिए सभी में है। आत्मा अमर सत्य है; मामला नश्वर त्रुटि है। आत्मा ही वास्तविक और शाश्वत है; पदार्थ असत्य और लौकिक है। आत्मा ईश्वर है, और मनुष्य उसकी छवि और समानता है। इसलिए आदमी भौतिक नहीं है; वह आध्यात्मिक है।

2. 332: 4 (पिता)-8

पिता-माता देवता का नाम है, जो उनकी आध्यात्मिक रचना के उनके कोमल संबंधों को इंगित करता है। जैसा कि प्रेरित ने इसे उन शब्दों में व्यक्त किया है जो उसने एक क्लासिक कवि से मंजूर होने के साथ उद्धृत किए थे: "क्योंकि हम भी उसकी संतान हैं।"

3. 381: 17-19

अनन्त जीवन और प्रेम में कोई बीमारी, पाप या मृत्यु नहीं है, और धर्मशास्त्र घोषित करते हैं कि हम अनन्त परमेश्वर में रहते हैं, चलते हैं और अपना अस्तित्व रखते हैं।

4. 307: 31-13

त्रुटि के भयानक दिन, कालापन और अराजकता के ऊपर, सत्य की आवाज अभी भी कहती है: "एडम, तुम कहाँ हो? चेतना, तुम कहाँ हो? क्या आप इस विश्वास में निवास करते हैं कि मन भौतिक है, और यह बुराई मन है, या आप जीवित विश्वास में कला है कि एक ईश्वर है और उसकी आज्ञा रख सकता है?" जब तक सबक नहीं सीखा जाता है कि भगवान एकमात्र मन शासी आदमी है, तब तक नश्वर विश्वास डर जाएगा क्योंकि यह शुरुआत में था, और मांग से छिप जाएगा, "आप कहाँ हैं?" यह भयानक मांग, "एडम, तुम कहाँ हो?" सिर, हृदय, पेट, रक्त, नसों, आदि से प्रवेश द्वारा जुड़ा हुआ है: "लो, यहां मैं हूँ, शरीर में खुशी और जीवन की तलाश कर रहा हूँ, लेकिन केवल एक भ्रम ढूँढ रहा हूँ, झूठे दावों का सम्मिश्रण, झूठी खुशी, दर्द, पाप, बीमारी और मृत्यु।"

5. 167: 20 ("शरीर आत्मा विरोध।)-26

"शरीर आत्मा के विरोध में लालसा करती है।" शरीर और आत्मा क्रिया में एक नहीं हो सकते, जैसे अच्छाई और बुराई एक नहीं हो सकते। रुक-रुक कर काम करना या आधी-अधूरी स्थिति अपनाना या आत्मा और पदार्थ, सत्य और त्रुटि के साथ समान रूप से काम करने की अपेक्षा करना बुद्धिमानी नहीं है। केवल एक ही मार्ग है - अर्थात् ईश्वर और उसका विचार - जो आध्यात्मिक अस्तित्व की ओर ले जाता है।

6. 201: 7 (हम)-12

हम झूठी नींव पर सुरक्षित रूप से निर्माण नहीं कर सकते। सत्य एक नया प्राणी बनाता है, जिसमें पुरानी चीजें गुजर जाती हैं और "सभी चीजें नई हो गई हैं।" जुनून, स्वार्थ, झूठी भूख, घृणा, भय, सभी कामुकता, आध्यात्मिकता के लिए उपज, और होने का अतिरेक ईश्वर की तरफ है, अच्छा।

7. 91: 5-8

आइए हम खुद को इस विश्वास से मुक्त करें कि मनुष्य ईश्वर से अलग हो जाता है, और केवल ईश्वरीय सिद्धांत, जीवन और प्रेम का पालन करता है। यहाँ सभी सच्चे आध्यात्मिक विकास के लिए प्रस्थान का महान बिंदु है।

8. 470: 32-5

साइंस में ईश्वर और मनुष्य के संबंध, ईश्वरीय सिद्धांत और विचार अविनाशी हैं; और विज्ञान जानता है कि कोई चूक नहीं हुई है और न ही सद्भाव में लौटा लेकिन यह ईश्वरीय आदेश या आध्यात्मिक कानून रखता है, जिसमें

भगवान और वह जो कुछ भी बनाता है वह परिपूर्ण और शाश्वत है, अपने सनातन इतिहास में अपरिवर्तित रहा है।

9. 407: 22 (मैं)-28

विज्ञान में, सभी अनन्त, आध्यात्मिक, परिपूर्ण, हर क्रिया में सामंजस्यपूर्ण हैं। अपने आदर्श के विपरीत अपने आदर्शों को अपने विचारों में उपस्थित होने दें। विचार का यह आधुनिकीकरण प्रकाश में लाता है, और दिव्य मन, जीवन को मृत्यु नहीं, आपकी चेतना में लाता है।

10. 411: 13-22, 27-28, 32-1

यह दर्ज है कि एक बार यीशु ने एक बीमारी का नाम पूछा, - एक बीमारी जिसे आधुनिक लोग मनोभ्रंश कहते हैं। दानव, या दुष्ट, ने जवाब दिया कि उसका नाम लीजन था। उसके बाद यीशु ने बुराई को खत्म कर दिया, और पागल आदमी को बदल दिया गया और सीधे पूरे हो गए। इंजील आयात करने के लिए लगता है कि यीशु ने बुराई को आत्म-देखा और इसलिए नष्ट कर दिया।

सभी बीमारी का कारण और आधार भय, अज्ञानता या पाप है। रोग हमेशा एक झूठी भावना से प्रेरित होता है जो मानसिक रूप से मनोरंजन करता है, नष्ट नहीं होता है।

हमेशा अपने उपचार की शुरुआत मरीजों का डर दूर करके करें।... यदि आप भय को पूरी तरह से दूर करने में सफल हो जाते हैं, तो आपका रोगी ठीक हो जाता है।

11. 414: 4-14

पागलपन का उपचार विशेष रूप से दिलचस्प है। हालांकि मामले में बाधा है, यह सच्चाई की सलामी कार्रवाई के लिए अधिकांश रोगों की तुलना में अधिक आसानी से उपज देता है, जो त्रुटि का प्रतिकार करता है। पागलपन का इलाज करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली दलीलें अन्य बीमारियों की तरह ही हैं: अर्थात्, वह असंभावना, जो मस्तिष्क, मस्तिष्क को नियंत्रित या विचलित कर सकती है, पीड़ित या पीड़ित कर सकती है; यह भी तथ्य कि सत्य और प्रेम स्वस्थ राज्य, मार्गदर्शक और शासित नश्वर मन या रोगी के विचार को स्थापित करेंगे, और सभी त्रुटि को नष्ट कर देंगे, चाहे इसे मनोभ्रंश, घृणा, या कोई अन्य कलह कहा जाए।

12. 425: 23-28

चेतना एक बेहतर शरीर का निर्माण करती है जब सामग्री में विश्वास की जीत हुई है। आध्यात्मिक समझ से भौतिक विश्वास को ठीक करें, और आत्मा आपको नए सिरे से बनाएगी। आप फिर से ईश्वर को नाराज करने के

अलावा कभी नहीं डरेंगे, और आप कभी भी यह विश्वास नहीं करेंगे कि हृदय या शरीर का कोई भी हिस्सा आपको नष्ट कर सकता है।

13. 265: 5-15

मनुष्यों को ईश्वर के प्रति समर्पण करना चाहिए, उनका स्नेह और उद्देश्य आध्यात्मिक रूप से विकसित होना चाहिए, - उन्हें होने की व्यापक व्याख्याओं के पास होना चाहिए, और अनंत के कुछ उचित अर्थों को प्राप्त करना चाहिए, - ताकि पाप और मृत्यु दर को दूर किया जा सके।

किसी भी तरह से, आत्मा के लिए कुछ भी होने का यह वैज्ञानिक अर्थ, मनुष्य को देवता में अवशोषण और उसकी पहचान के नुकसान का सुझाव देता है, लेकिन मनुष्य में बढ़े हुए व्यक्तित्व, विचार और कर्म का व्यापक क्षेत्र, एक अधिक विस्तृत प्रेम, एक उच्च और अधिक स्थायी शांति।

14. 393: 8-15

मन शारीरिक इंद्रियों का स्वामी है, और बीमारी, पाप और मृत्यु को जीत सकता है। इस ईश्वर प्रदत्त अधिकार का प्रयोग करें। अपने शरीर पर अधिकार कर लो, और उसकी भावना और कार्य को नियंत्रित करो। आत्मा के सामर्थ्य में वृद्धि का विरोध करना अच्छा है। ईश्वर ने मनुष्य को इसके लिए सक्षम बनाया है, और कुछ भी मनुष्य में दिव्य रूप से दी गई क्षमता और शक्ति को नष्ट नहीं कर सकता है।

15. 264: 24-31

आध्यात्मिक जीवन और आशीर्वाद ही प्रमाण हैं, जिसके द्वारा हम सच्चे अस्तित्व को पहचान सकते हैं और उस अकथनीय शांति को महसूस कर सकते हैं जो आध्यात्मिक प्रेम को अवशोषित करने से आती है।

जब हम क्रिश्चियन साइंस में रास्ता सीखते हैं और मनुष्य के आध्यात्मिक होने को पहचानते हैं, तो हम भगवान की रचना को समझेंगे और समझेंगे, - पृथ्वी और स्वर्ग और मनुष्य की सभी महिमा।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6